P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- V, ISSUE-I,August-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

साक्षर एवं निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

रानी दुबे
पूर्व विभागाध्यक्षा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
डॉ0 हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर,म0प्र0

सारांश

समाज के निर्माण एवं बालक के उत्थान में महिलाओ का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बालक अधिकांश समय अपने परिवार में अपनी माँ के साथ व्यतीत करता है, मूल्यो के निर्माण में उसकी अहम भूमिका होती है, अतः जब तक उसकी स्वयं की अभिवृत्ति पारिवारिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक नहीं होगी, वह परिवार में मूल्यों का उचित बीजारोपण नहीं कर सकेगी। वर्तमान परिवेश में महिलाओं पर घर एवं बाहर की दोहरी जिम्मेदारी है, अतः ऐसे मे वे पारिवारिक मूल्यो के प्रति सजग है या नहीं यह भी एक विचारणीय प्रश्न है।

पारिवारिक मूल्यों के अंतर्गत परिवार के प्रति स्नेह, जिम्मेदार मातृत्व–पितृत्व, परिवार नियोजन, पारिवारिक सदस्यों के बीच परस्पर सहयोग सामंजस्य आदि बातो में रूचि लेना। परिवार के रूचिपूर्ण लक्ष्यों को ही पारिवारिक मूल्यों की संज्ञा दी जा सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षर एवं निरक्षर महिलाओं की परिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः साक्षर एवं निरक्षर प्रौढ़ महिलाएं, पारिवारिक मूल्य, अभिवृत्ति ।

प्रस्तावना

भारत सभ्यता और संस्कृति की वह अविरल धारा है, जो प्राचीनकाल से निर्वाध गति से बहती चली आ रही है, भारत के प्रत्येक अक्षर में एक गूढ अर्थ का समावेश है । भारत के ''भा'' का अर्थ है – ''चमक'', ''क्रांति'', 'आभा' रस का अर्थ है – 'नियत', संलग्न' अर्थात प्रकाश की ओर संलग्न, नित नवीन ऊँचाइयो को छूने वाला, शांति का समर्थन करने वाला देश ही भारत है ।

भारत के इस प्रकाशवान,ऊर्जावान रूप के मूल में छिपे हुए हैं, हमारी सभ्यता व संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने वाले ''जीवन मूल्य'' जो प्रत्येक भारतीय व्यक्ति के जीवन की मूल आधारशिला है। यहाँ पर एक बात और विचारणीय है कि यदि हमारी सभ्यता व संस्कृति का आधार हमारे मूल्य हैं, तो हमारे जीवन मूल्यो की मुख्य निर्मात्री महिलाएँ है ।

महात्मा गाँधी का कथन था कि ''इस धरती पर जो कुछ भी पवित्र है, धार्मिक है, महिलाएँ उसकी विशेष संरक्षिकाये है।'' रमण लेखक के अनुसार" पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया और जीवमात्र के लिए करूणा संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है''।

समाज के निर्माण एवं बालक के उत्थान में महिलाओ का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बालक अधिकांश समय अपने परिवार में अपनी माँ के साथ व्यतीत करता है, मूल्यो के निर्माण में उसकी अहम भूमिका होती है, अतः जब तक उसकी स्वयं की अभिवृत्ति पारिवारिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक नहीं होगी, वह परिवार में मूल्यों का उचित बीजारोपण नहीं कर सकेगी। वर्तमान परिवेश में महिलाओं पर घर एवं बाहर की दोहरी जिम्मेदारी है, अतः ऐसे में वे पारिवारिक मूल्यो के प्रति सजग है या नहीं यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। अब प्रश्न यह उठता है कि 'मूल्य' क्या है, ''मूल्य'' का प्रयोग व्यक्ति की प्रेरणाओं, रूचियों एवं अभिवृत्तियों के मापन हेतु किया जाता है, प्रत्येक व्यक्ति में मूल्य होते है जिनके अनुरूप वह कार्य करना चाहता है तथा ऐसे कार्यो को करने में उसे संतुष्टि व आनंद का अनुभव होता है। व्यक्ति के मूल्यों से उसका व्यक्तित्व प्रभावित होता है। पारिवारिक मूल्यों के अंतर्गत परिवार के प्रति स्नेह, जिम्मेदार मातृत्व–पितृत्व, परिवार नियोजन, पारिवारिक सदस्यों के बीच परस्पर सहयोग सामंजस्य आदि बातो में रूचि लेना।

पारिवारिक मूल्य (परिवार मूल्य) दो शब्दों के योग से बना है । परिवार समाज की मूल इकाई है और एक सामाजिक समूह की भांति कार्य करता है,

कोई भी लक्ष्य तब ''मूल्य'' बन जाता है, जब उसमें कोई रूचि लेता है। इस प्रकार परिवार के रूचिपूर्ण लक्ष्यों को ही पारिवारिक मूल्यों की संज्ञा दी जा सकती है।

परिवारिक मूल्यों को परिवार के प्रमुख कारक प्रभावित करते है ।

1. परिवार का आकार (एकल या संयुक्त)
2. पारिवार की आवश्यकताएँ एवं स्त्रोत
3. पारिवारिक बजट
4. भविष्य के लिए योजनाएँ
5. स्वास्थ्य एवं पोषण आहार
6. रोजगार
7. मनोरंजन
8. सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य विषयक, आर्थिक मूल्य
9. परिवार की एकता को बनाए रखना
10. माता–पिता व बच्चों के बीच कथन व्यवहार
11. पारिवारिक जीवन और रहन सहन का स्तर
12. महिलाओं की बदलती हुई भूमिका

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया, प्रश्नावली में 75 प्रश्नों का समावेश किया गया है इसे 7 भागों में विभक्त किया गया है कुछ प्रश्न धनात्मक व कुछ ऋणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है ।

1. पारिवारिक पक्ष
2. सामाजिक पक्ष
3. धार्मिक पक्ष
4. शैक्षिक पक्ष
5. सांस्कृतिक पक्ष
6. आर्थिक पक्ष
7. स्वास्थ्य विषयक पक्ष

क्रमांक	प्रश्नो की प्रकृति	संभावित उत्तर		
1	धनात्मक प्रश्नो का भारांक	सहतम	अनिश्चित	असहमत
		2	1	0
2	ऋणात्मक प्रश्नो का भारांक	0	1	2

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में 200 प्रौढ़ महिलाएँ जिसमें 100 साक्षर महिलाएँ एवं 100 निरक्षर महिलाएँ न्यादर्श के लिए चुने गए।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं सांख्यिकी

प्रदत्तो के विश्लेषण एवं व्याख्या में मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है ।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य है ।

1. शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. ग्रामीण निरक्षर एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यो के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं तथा ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है ।
2. ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओंएवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है
3. शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है ।
4. शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है ।
5. शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है ।
6. शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं तथा ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यो के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक 1.1
शहरी एवं ग्रामीण साक्षर व निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के मध्यमानमानक विचलन/मानकत्रुटि की सारणी

क्र.	वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	t Value	सार्थकता 0.01 0.05	df
1.	शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाएँ	107	5.19	0.73			
	शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएँ	100	9.55	1.35	3.64	S. S	98
2.	ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाएँ	97	2.85	.40			
	ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाएँ	98.1	4	.56	1.18	ns ns	98

सारणी क्रमांक 1.1 का अवलोकन करने से स्पष्ट हो रहा है कि शहरी साक्षर एवं शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के मध्य t का मान 3.64 है जो कि 98 df के 0.05 एवं 0.01 विश्वास के स्तर के आवश्यक मान 1.98 एवं 2.63 के मान से काफी अधिक है इससे स्पष्ट होता है कि वास्तव में दोनो समूहों के अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक अंतर है ।

ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के मध्य जका मान 1.18 है जो कि 98 df के 0.05 एवं 0.01 विश्वास के स्तर के आवश्यक मान 1.98 एवं 2.63 से काफी कम है इससे स्पष्ट होता है कि वास्तव में दोनों समूहों के अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्र. 1.1 (इ)

क्र.	वर्ग	df	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	t-value	विश्वास स्तर 0.01 0.05
1	शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाएँ ग्रामीण साक्षर प्रौढ़महिलाएँ	98	107 97	5.19 2.85	.73 .40	8.84	S S
2	शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएँ ग्रामीण साक्षरप्रौढ़ महिलाएँ	98	100 98.1	9.55 4	1.35 .50	1.04	ns ns

सारणी क्र. 1.1(इ) के अवलोकन से स्पष्ट हो रहा है कि शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं के मध्य t का मान 8.84 है जो कि 98.4 के 0.01 एवं 0.05 विश्वास के स्तर के मान से अधिक है इससे स्पष्ट होता है कि वास्तव में दोनो समूहो के अभिवृत्ति के स्तर में सार्थक अंतर है ।

शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओं के मध्य ज का मान 1.04 है जो यह प्रदर्शित करता है कि विश्वास के स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है इससे स्पष्ट होता है कि वास्तव में दोनो समूहो के अभिवृत्ति के मध्य में सार्थक अंतर नहीं है ।

सारणी क्र. 1.1 (ब)

क्र.	वर्ग	df	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	अंसनम	विश्वास स्तर 0.01 0.05
1	शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाएँ ग्रामीण निरक्षर प्रौढ. महिलाएँ	98	107 98.1	5.19 4	.73 .56	7.00	s s
2	शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएँ ग्रामीण साक्षर प्रौढ़महिलाएँ	98	100 97	9.55 2.85	1.35 .40	1.73	ns ns

शहरी क्रमांक 1.1 (ब) के अवलोकन से स्पष्ट हो रहा है कि शहरी साक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के मध्य t का मान 7.00 है जो कि सारणी मान से अत्याधिक है । जो स्पष्ट करता है कि दोनो समूहो के अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर है। शहरी निरक्षर प्रौढ़ व ग्रामीण साक्षर प्रौढ़ महिलाओ के मध्य t का मान 1.73 है जो कि 0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः दोनो समूहो के मध्य सार्थक अंतर नही है ।

क्रियाविधि

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

1. विद्यालयों में पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए एवं इस दिशा में पूर्व अनुसंधानों के कियानवयन की आवश्यकता है।
2. शिक्षा प्रशिक्षण और रोजगार के द्वारा महिलाओं की पाररिवारिक एवं गैर पारिवारिक भूमिकाओं में व्यक्तिगत परिपूर्ति के लिए सरकारों को अवसर प्रदान करना चाहिए।
3. परिवार नियोजन को इस तरह समर्थन दिया जाए कि वह माता एवं शिशु के स्वास्थ्य कल्याण कार्यक्रमों को इस प्रकार आयोजित करें ताकि बहुत कम आयु में माँ बनने की संभावना को घटाया जाए।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

ओमप्रकाश सैनी (2010) ने ''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन, मूल्यों एवं आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन'' किया। तथा अपने शोध अध्ययन में पाया कि परिवार द्वारा ध्यान दिये जाने एवं स्वीकृति प्राप्त छात्राओं के सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य एवं सामाजिक मूल्य में ध्यान दिये जाने वाली छात्राओं में स्वीकृति प्राप्त छात्राओं की अपेक्षा सैद्धान्तिक, आर्थिक, एवं सामाजिक मूल्यों की मात्रा अधिक पायी गई। सौन्दर्यात्मक मूल्य राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य में स्वीकृति प्राप्त छात्राओं में ध्यान दिये जाने वाली छात्राओं की अपेक्षा सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों की मात्रा अधिक पायी गई।

किस्टनर एण्ड होगेन ने (1968) में टू स्टेडी द थ्योरीटिकल एकोनॉमिक पालिटिकल, एस्थेटिक एण्ड रीलीजियस वेल्यूज एमंग टीचर्स पर शोध अध्ययन किया, उन्होने निष्कर्ष में पाया कि थ्योरीटिकल एकोनॉमिक, पॉलीटिकल, उस्थेटिक एण्ड रीलिजियस मूल्य पूरूषों में स्त्रियों की तुलना में अधिक पाये जाते है।

डिम्पल (2015) आइ.ए. रम्स ई. डीम्ड युनिवर्सिटी सारवारकर, ने आधुनिक मिडिल एवं परम्परागत परिवारों की किशोर बालिकाओं के व्यक्तिगत मूल्य, आकांक्षा स्तर एवं, पारिवारिक प्रतिष्ठा की भावना का अध्ययन किया। तथा निष्कर्ष में बताया कि

1. आधुनिक, मिडिल एवं परम्परागत परिवारों की किशोर बालिकाओं में व्यक्तिगत मूल्य औसत स्तर के पाए गए।
2. आधुनिक परिवारों की किशोर बालिकाओं के प्रजातांत्रिक मूल्य मिडिल परिवारों की किशोर बालिकाओं से अधिक पाए गए। जबकि आधुनिक परिवारों की किशोरा बालिकाओं के आर्थिक मूल्य मिडिल परिवारों की किशोर बालिकाओं से कम पाए गए।

स्वामी (1984) ने ए फेक्टोरियल स्टडी ऑफ द वैल्यू सिस्टम ऑफ एजुकेटेड यूथ इन एन इंडियन लोकेलिटी ने अपने शोध अध्ययन में पाया स्त्रियों में सामाजिक और मनोरंजनात्मक मूल्य पुरूष युवा की तुलना में अधिक पाये गये।

निष्कर्ष

प्रस्ततु निष्कर्ष के आधार पर कह सकतें हैं कि साक्षर प्रौढ़ महिलाओं की तुलना में निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं में पारिवारिक मूल्य की अभिवृत्ति कम पायी जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि शिक्षा के अभाव के कारण व स्वास्थ्य संबंधी, आर्थिक संवंधी एवं शैक्षिक संवंधी उतनी अधिक जानकारी नहीं रखती है जितनी की शिक्षित प्रौढ़ महिलाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भार्गव महेश (1985) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण नेशनल साइक्लोजीकल कॉर्पोरेशन आगरा।
2. द्वारिका डॉ. लामसिंह प्रसाद एवं महेश भार्गव मनोविज्ञान एवं शिक्षा सांख्यिकी के मूल आधार, एच. पी. भार्गव आगरा 2000
3. गैरिट हेनरी ई. शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी प्रयोग 1972 कल्याणी पब्लिशर्स आगरा
4. ऑवसेट (1966) ''शिक्षकों में सैद्धांतिक एवं राजनैतिक उच्च स्तर के मूल्य''
5. बारनाथ तथा फोडिर्श, (1961) ''शिक्षकों के समूह में धार्मिक तथा सामाजिक मूल्य''
6. बरी तथा मार्गेन, (1969) शिक्षकों के मूल्यों के परीक्षण संबंधी व्यवहारों के बीच अध्ययन।
7. बेनामिकर तथा टेनीसन (1970), ''मूल्यो का माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर अध्ययन''
8. मोहसिन (1950)''मूल्यों का अध्ययन''
9. स्टेटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन : हेनरी ई.गैरिट, पाँचवां संस्करण, पृष्ठ संख्या 184–241,449
10. समाज मनोविज्ञान : डॉ0 एस. एस. माथुर चतुर्थ संस्करण (1976), पृष्ठ संख्या 444–448
11. शिक्षा मनोविज्ञान : डॉ0 एस. एस. माथुर (2001), पृष्ठ संख्या 614–619
12. फन्डामेन्टल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च : आर. ए. शर्मा (1984), पृष्ठ संख्या 296–301, 361